लॉरी
बेकर
SHWETA
SALUNKHE
श्वेता साळुंखे, नागेश मोने
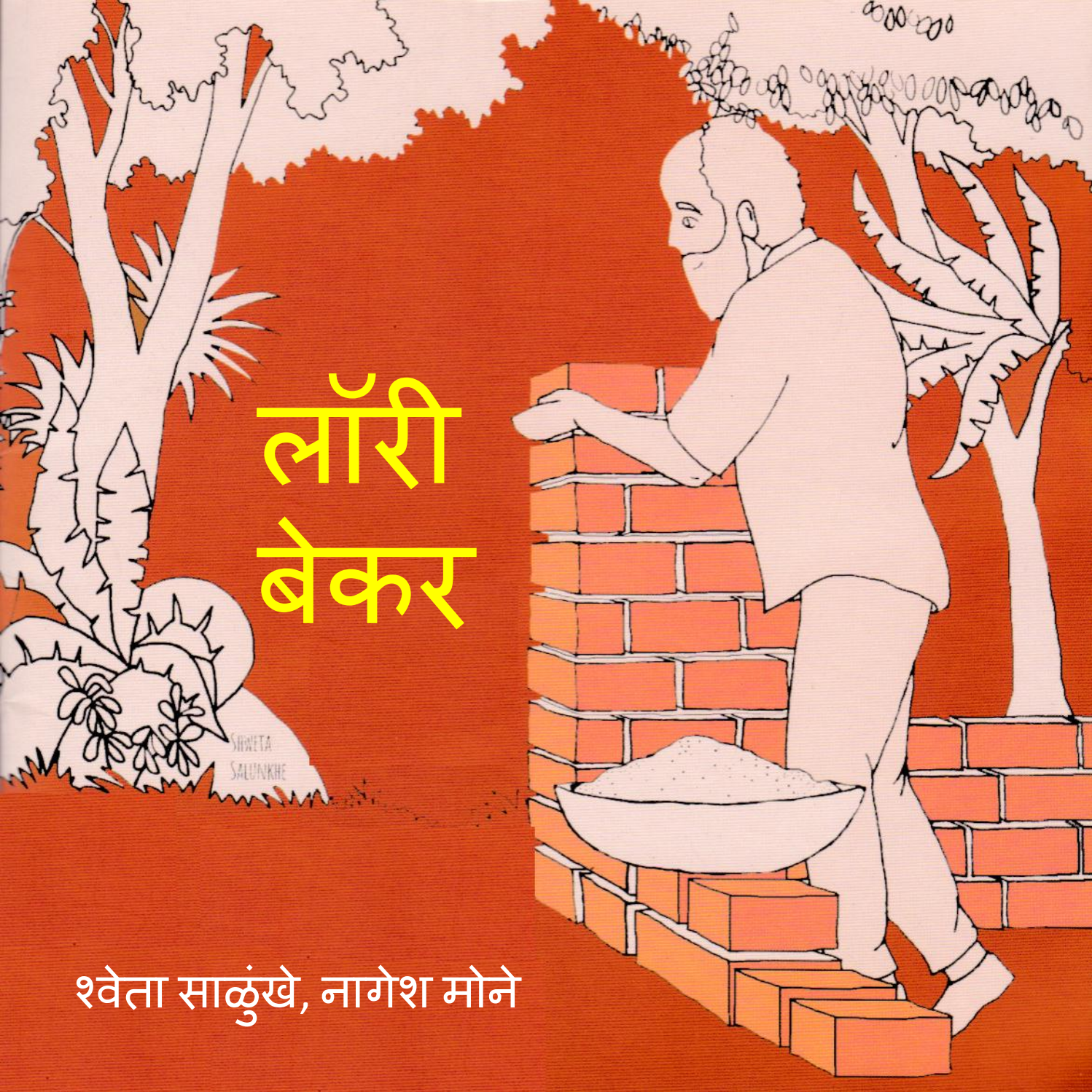
लॉरी बेकर

डेक्कन एज्युकेशन सोसायटीचे
न्यू इंग्लिश स्कूल, टिळक रोड, पुणे ३०.

'अहम भारत' उपक्रमांतर्गत पुस्तिका®

Cadence Design Systems, Inc.
cadence®

लॉरी बेकर

"मैं कभी सामाजिक वर्गों - अमीर, मध्यमवर्ग, गरीब, आदिवासी या मछुआरों के लिए घर नहीं बनाता हूँ. मैं केवल मैथ्यू, भास्करन, मुनीर या शंकरन जैसे लोगों के लिए ही घर बनाता हूँ." - लॉरी बेकर

लॉरी बेकर
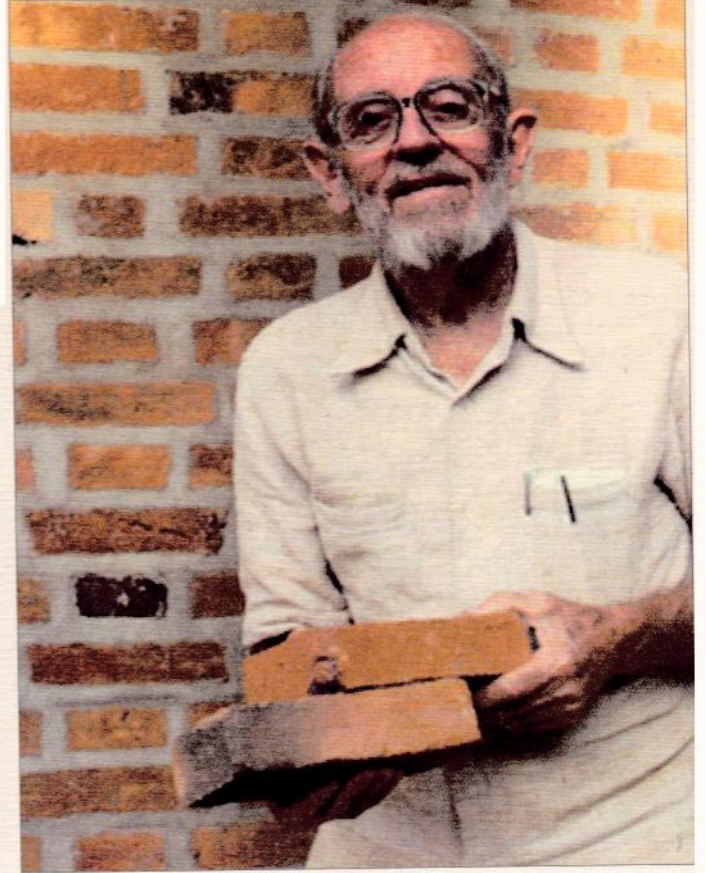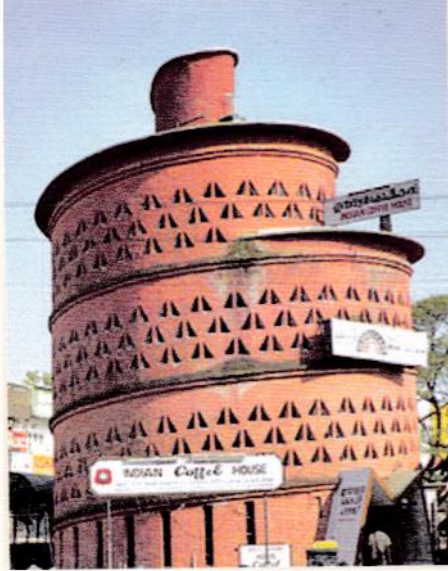
"वास्तुशिल्प के क्षेत्र में भारत में बहुत उत्तम काम हुआ है. भारत में वास्तुशिल्प की खुद अपनी एक अनूठी शैली है. दुनिया के किसी भी अन्य देश में इतनी विविधता नहीं मिलेगी. मुझे लगता है कि हमें इस विरासत को नष्ट नहीं होने देना चाहिए. हमें उसे संजोकर उसके उपयोग को बढ़ाना चाहिए और भारतीय शैली के अनुसार इमारतों का निर्माण करके इस परंपरा को और आगे लेकर जाना चाहिए."

लॉरी बेकर

2 मार्च 1917 को लॉरेंस विल्फ्रेड बेकर का जन्म इंग्लैंड में हुआ. आज हम उन्हें "लॉरी बेकर" के नाम से जानते हैं. लॉरेंस विल्फ्रेड बेकर या "लॉरी बेकर" एक ऐसे परिवार में पले-बढ़े जहाँ परम्पराओं का निष्ठापूर्वक पालन किया जाता था.

बेकर को बचपन से वास्तुशास्त्र और इमारतों के निर्माण में रूचि थी. 17 वर्ष की अल्प आयु में लॉरी साइकिल पर, यूरोप का सफर करने निकले. इस यात्रा में वो कई सुन्दर शहर और लैंडस्केप देख पाए. उसे वे अत्यंत पसंद आये. अलग-अलग देशों में घरों की विविधता का उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा. यूरोप के सफर से लौटने के बाद लॉरी ने भविष्य में "आर्किटेक्चर" के क्षेत्र में काम करने का अपना पक्का मन बनाया.

शिक्षा

मैट्रिक पास करने के बाद बेकर ने बिर्मिंघम स्कूल ऑफ़ आर्किटेक्चर, लंदन में पढ़ाई की. 1938 में उन्हें रॉयल इंस्टिट्यूट ऑफ़ आर्चीटेक्ट्स की सदस्यता मिली. भाग्यवश, इंग्लैंड में उन्हें आर्किटेक्चर के क्षेत्र में काम करने का कोई ख़ास मौका नहीं मिला. फिर उसी साल - 1939 में, दूसरा महायुद्ध शुरू हो गया.

"फ्रेंड्स" (मित्र) एम्बुलेंस

दूसरे महायुद्ध के दौरान बेकर और उसके मित्रों ने फ्रेंड्स एम्बुलेंस यूनिट (Friends Ambulance Unit- FAU) में अपना नाम दर्ज़ कराया. सर्जरी से पहले बेहोश करने, छोटी-मोटी सर्जरी, मलहम-पट्टी, इंजेक्शन आदि की ट्रेनिंग लेने के बाद वो युद्ध के मैदान में घायल लोगों की मदद के लिए गए.
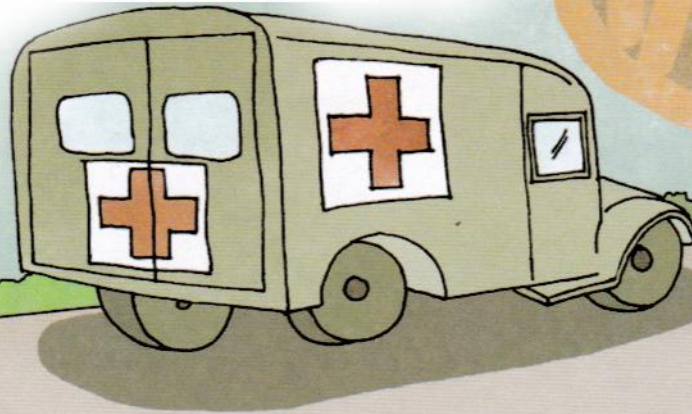
चीन-जापान युद्ध

कुछ समय बाद चीन और जापान के बीच युद्ध छिड़ गया. तब चीनी सरकार ने फ्रेंड्स एम्बुलेंस से सेवा की मदद मांगी. युद्ध के दौरान ज़ख्मी हुए लोगों की सर्जरी और ऑपरेशन के बाद फ्रेंड्स एम्बुलेंस के लोग मरीज़ों की देखभाल करते थे. लॉरी बेकर भी उस टीम में शामिल हुए.
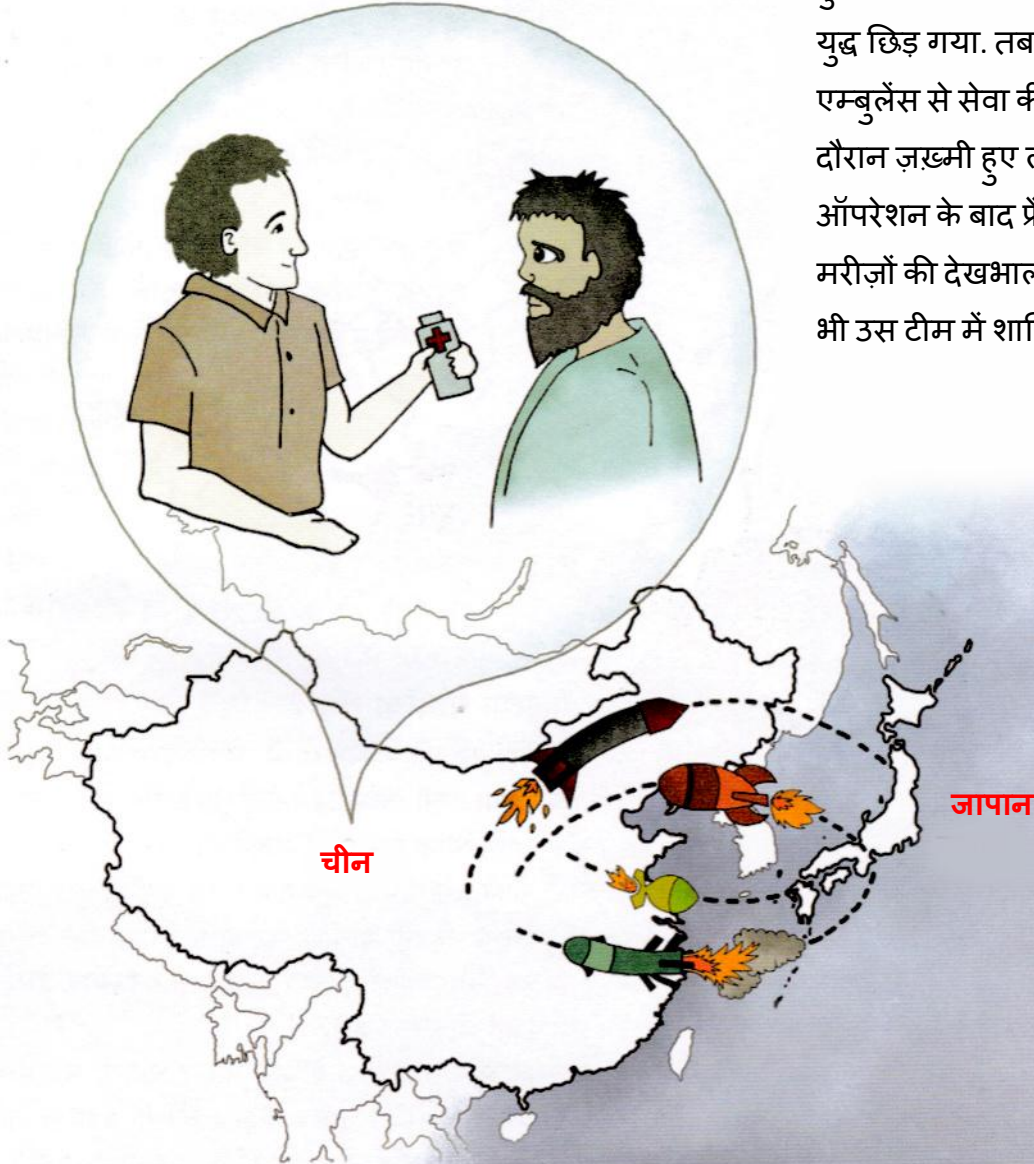
महात्मा गांधी का प्रभाव

उसके बाद लॉरी बेकर ने म्यांमार में, अलग-अलग युद्धों में, घायल सैनिकों और कुष्ठ रोगियों की सेवा की. सेहत की ओर ध्यान न देने और बहुत मेहनत करने के कारण बेकर की तबियत खराब हो गई और उन्हें दुबारा इंग्लैंड लौटना पड़ा.

इंग्लैंड लौटते वक्त बेकर को पानी के जहाज़ के लिए मुंबई में तीन महीने का इंतज़ार करना पड़ा. उसी दौरान बेकर की महात्मा गांधी से भेंट हुई. गांधीजी के अहिंसा और प्रेम के सन्देश ने बेकर के दिल में गहरी पैंठ की.

गांधीजी ने लॉरी बेकर से भारत वापिस आने की विनती की. भारत के ग्रामीण इलाकों में अच्छे घरों की बेहद ज़रुरत थी. गांधीजी ने बेकर से यह भी कहा कि अगर घर निर्माण का सारा सामान उसके आसपास में स्थित पांच मील के दायरे से आए तो और भी अच्छा होगा.

लॉरी बेकर का विवाह

1945 में लॉरी बेकर कुष्ठ रोगियों की सेवा के सिलसिले में दुबारा भारत आये. उस दौरान वो अपने मित्र डॉ. चैंडी के साथ रहे. तभी उनकी मुलाकात डॉ. चैंडी की बहन डॉ. एलिज़ाबेथ जैकब से हुई. एलिज़ाबेथ, पेशे से डॉक्टर थीं.

लॉरी बेकर और एलिज़ाबेथ ने साथ मिलकर एक पुरानी क्लिनिक को एक बड़े अस्पताल में बदलने का काम किया. एलिज़ाबेथ, कुष्ठ रोगियों का इलाज करती थीं. दोनों के जीवन का ध्येय एक-जैसा ही था. फिर एक दिन जब दोनों एक पत्थर पर साथ-साथ बैठे थे, तब लॉरी बेकर ने एलिज़ाबेथ के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा. क्योंकि एलिज़ाबेथ ने लॉरी बेकर के साथ कुछ समय काम किया था इसलिए वो उनके व्यवहार और प्रकृति से अच्छी तरह परिचित थीं. इसलिए शादी के लिए एलिज़ाबेथ ने तुरंत "हाँ" कर दी. 1948 में, दोनों का विवाह हुआ.
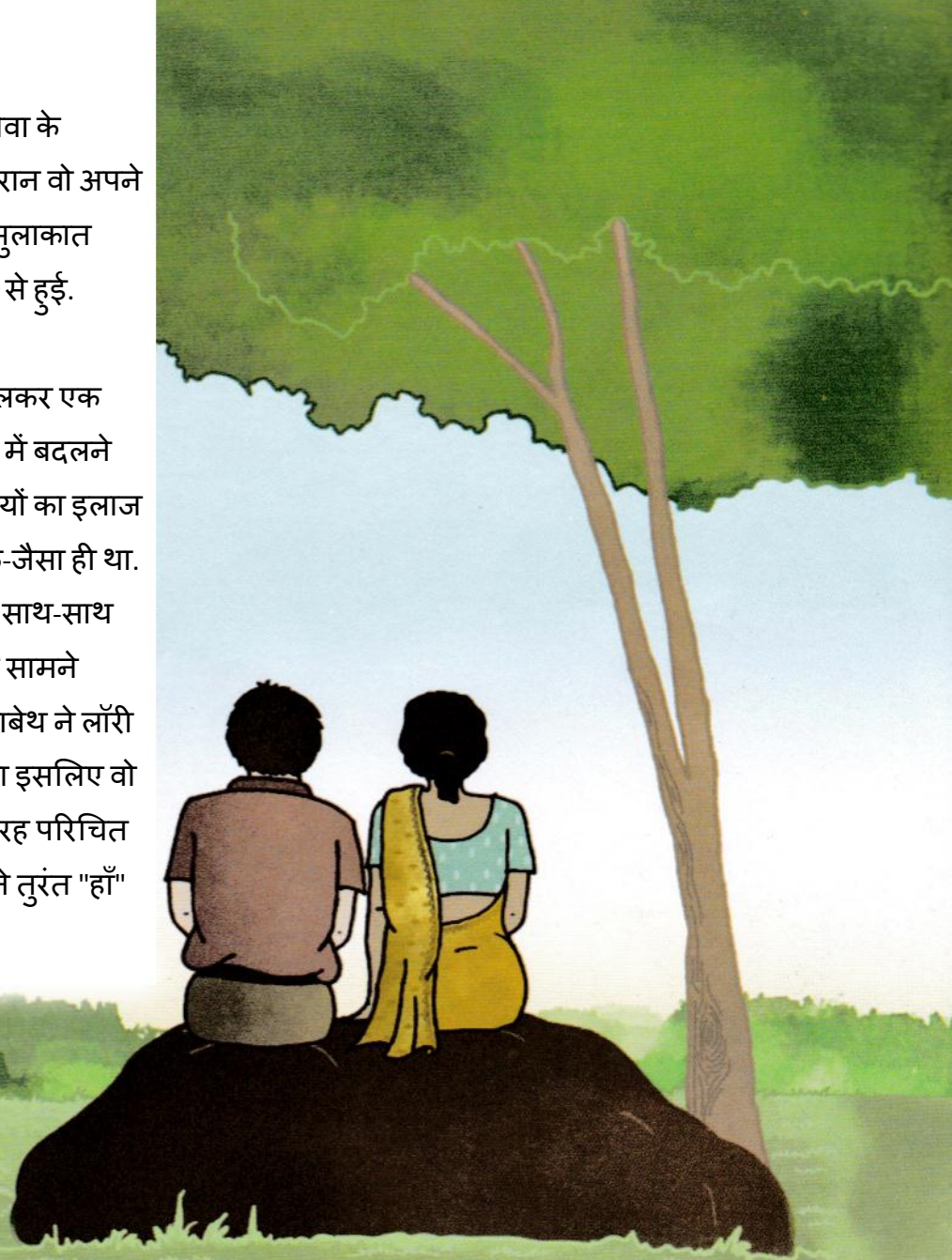
हिमालय में सोलह साल

शादी के बाद लॉरी बेकर और एलिज़ाबेथ हिमालय में स्थित "चंदाग" गांव में चले गए. उन्होंने अगले सोलह साल वहीँ गुज़ारे. जब लोगों ने सुना कि वहां एक नई डॉक्टर आई है, तो लोग दूर-दूर से वहां पर इलाज कराने के लिए आने लगे. शुरू में उन्होंने एक छोटी सी चाय की दुकान में ही अपनी क्लिनिक शुरू की. फिर कुछ समय बाद उन्होंने चेरा नामक गांव में अपना घर बनाया और वहीँ एक अस्पताल भी शुरू किया.

अगर कभी कोई लॉरी बेकर से पूछता कि, "तुम आर्किटेक्ट होकर, अस्पताल में क्या काम करते हो?" तो लॉरी बेकर हँसते हुए जवाब देते, "मेरी पत्नी डॉक्टर हैं और बाकी सारे काम करने वाला मैं, उनका सेवक (असिस्टेंट) हूँ!"

उत्तर प्रदेश के फैज़ाबाद में स्थित कुष्ठ रोगियों की देखभाल का काम भी लॉरी बेकर ने किया.
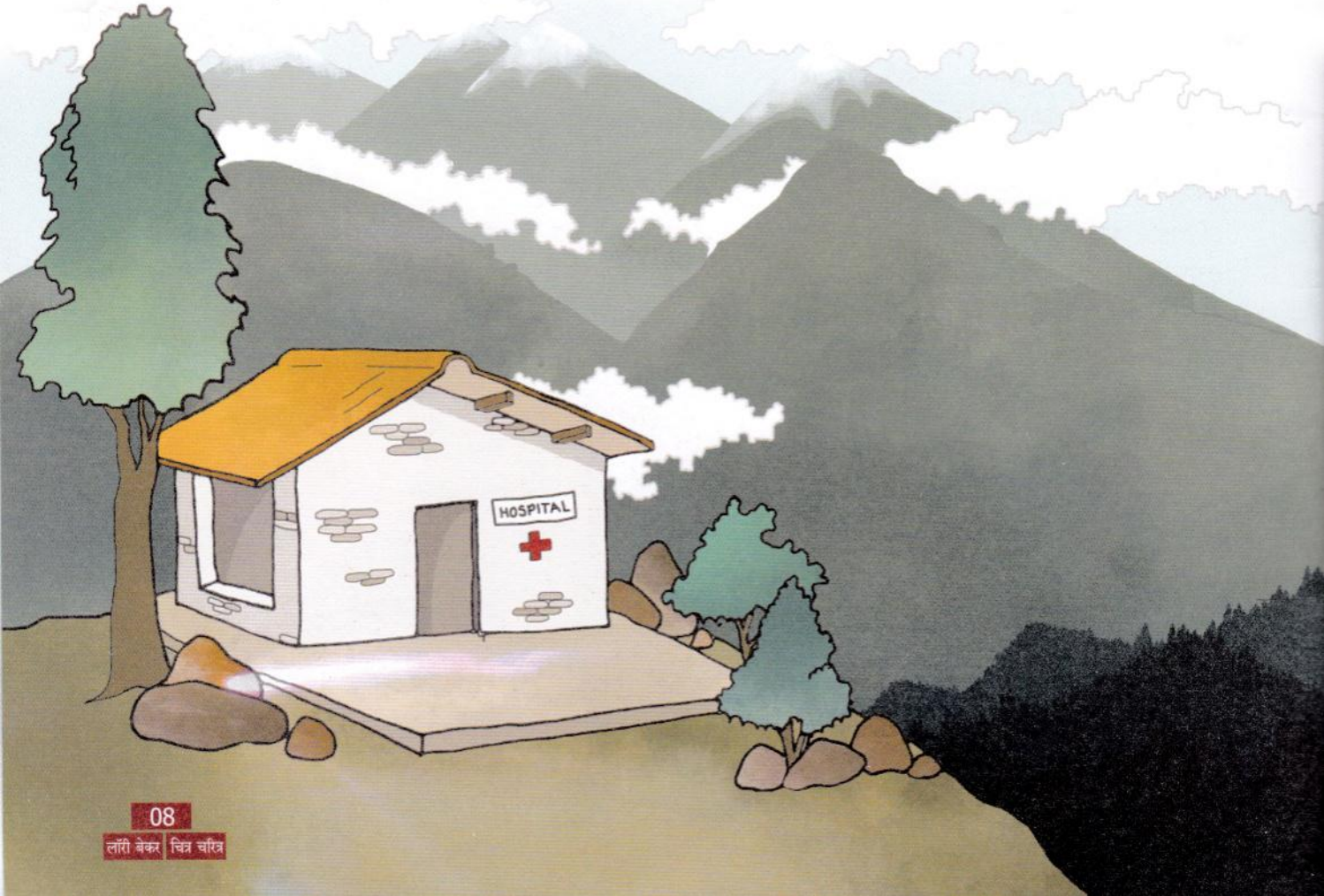
स्थानीय निर्माण शैली

हिमालय, केरल और भारत के अन्य इलाकों में घूमने के बाद लॉरी बेकर को लगा कि इंग्लैंड में उन्होंने जो आर्किटेक्चर की पढ़ाई की थी, वो भारत की विविध भौगोलिक परिस्थितियों में ज़्यादा उपयोगी नहीं होगी.

फिर उन्होंने स्थानीय निर्माण के तरीकों का अध्ययन, उनका संकलन और वर्गीकरण किया. उन्होंने लोकल कारीगरों, राज-मज़दूरों से स्थानीय घरों के निर्माण की शैली सीखी. उसके बाद वो आम लोगों की तरह वहीं पर रहने लगे.

लॉरी बेकर ने कई स्कूल, अस्पताल और समाजिक संस्थाएं बनाईं. इनमें से कई को वो अपने निजी खर्चे से चलाते थे. घर निर्माण के क्षेत्र में लॉरी बेकर की यह एक विशेष शुरुआत थी.
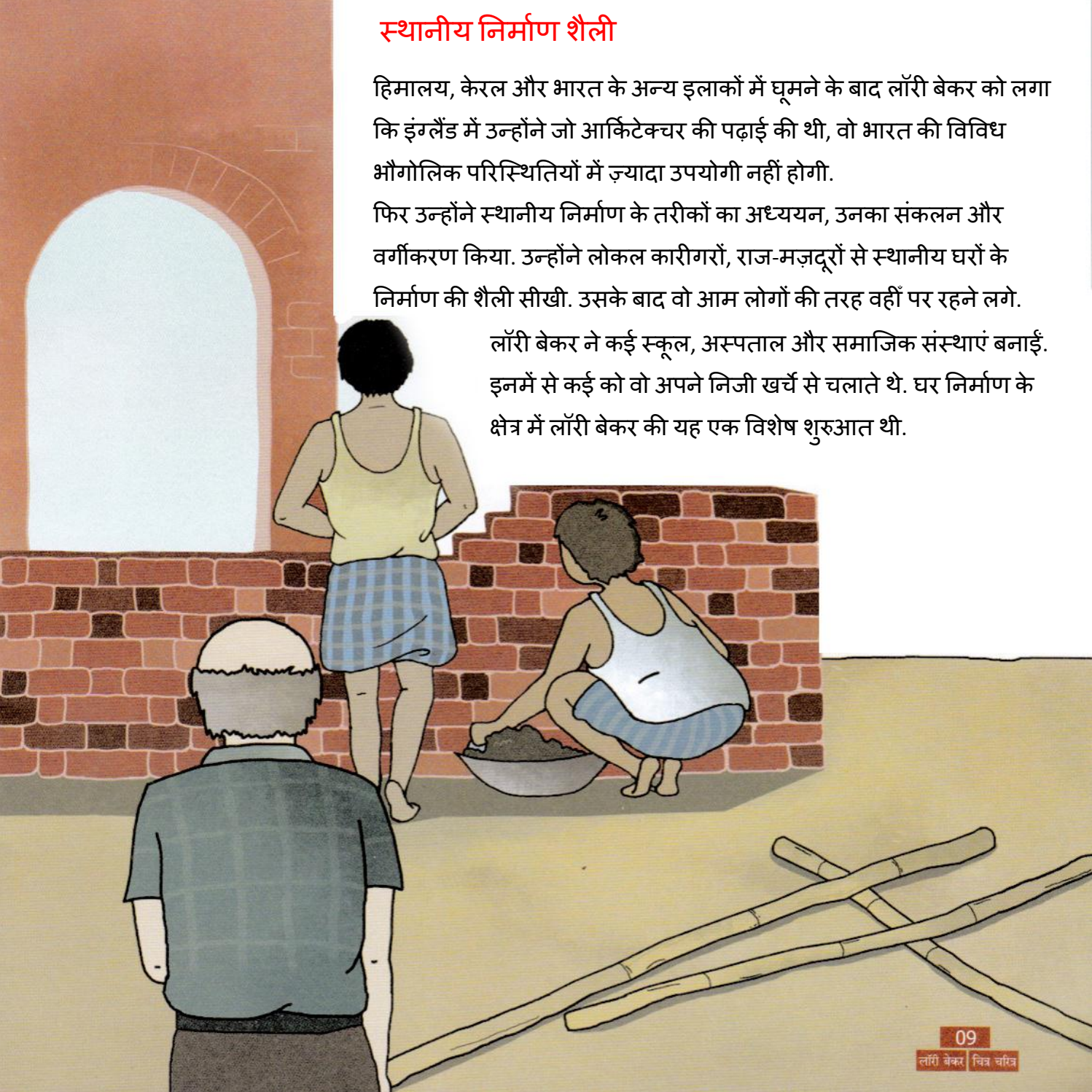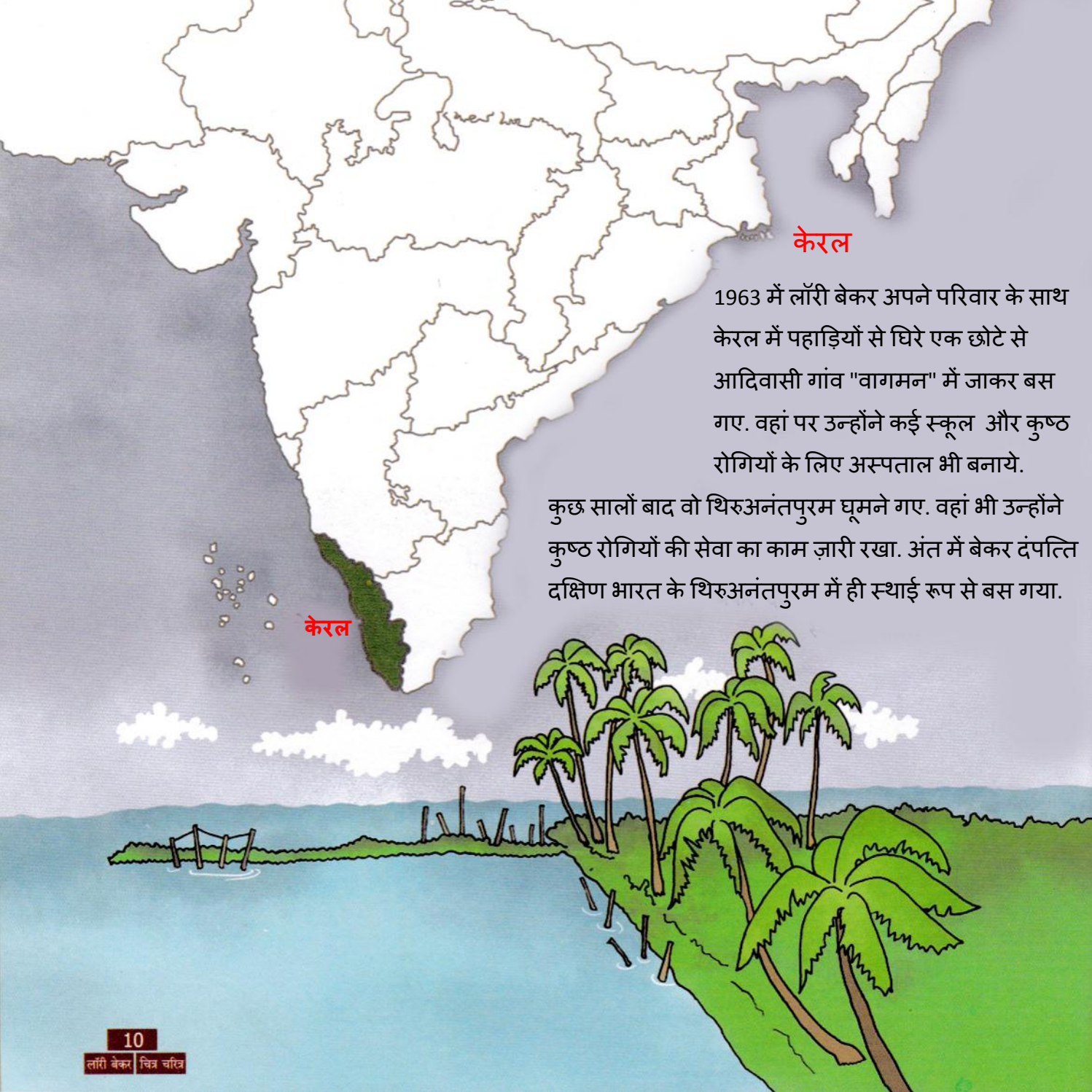
1963 में लॉरी बेकर अपने परिवार के साथ केरल में पहाड़ियों से घिरे एक छोटे से आदिवासी गांव "वागमन" में जाकर बस गए. वहां पर उन्होंने कई स्कूल और कुष्ठ रोगियों के लिए अस्पताल भी बनाये.

कुछ सालों बाद वो थिरुअनंतपुरम घूमने गए. वहां भी उन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा का काम ज़ारी रखा. अंत में बेकर दंपत्ति दक्षिण भारत के थिरुअनंतपुरम में ही स्थाई रूप से बस गया.

द हैमलेट (छोटा गांव)

थिरुअनंतपुरम में आने के बाद बेकर दंपत्ति ने खुद का अपना घर बनाने के लिए आधा एकड़ ज़मीन खरीदी. एक छोटी पहाड़ी के ऊपर और एक सुन्दर घाटी के सामने उन्होंने अपने नए घर "द हैमलेट" का निर्माण किया. दरअसल, वास्तुशास्त्र की दृष्टि से उनका घर एक तरह का संग्रहालय है.

ढलान वाली कबेलू की छतें, ईंट की दीवारें, जाली और झरोखे, दरवाज़े और खिड़कियों में, लॉरी बेकर द्वारा बनाये इस घर में, केरल के वास्तुशास्त्र में आई बदल की एक झलक दिखाई देती है.

बेकर का काम

बेकर ने चालीस सालों में अनेकों इमारतों का निर्माण किया. पिथौरागढ़ में उनके शुरूआती काम का बहुत कम ब्यौरा मिलता है. पर 1963 के बाद, स्थायी रूप से थिरुअनंतपुरम में बसने के बाद से उन्होंने तेज़ी से कम-कीमत की इमारतों के डिज़ाइन और निर्माण का काम शुरू किया.

थिरुअनंतपुरम में उन्होंने हज़ारों लोगों के निजी घर, चर्च आदि डिज़ाइन किए. उन्होंने कम-कीमत के सामान और स्थानीय निर्माण शैली का भरपूर उपयोग किया. उनकी हरेक इमारत में यह दोनों बातें साफ़ दिखाई देती हैं.
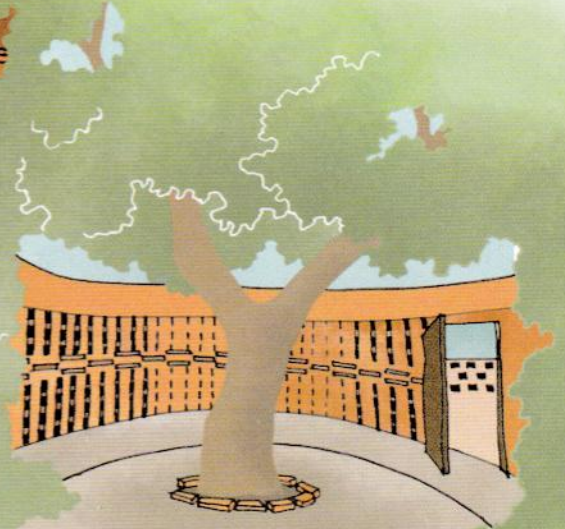
लॉरी बेकर के अपने शब्दों मे ....

"जो कुछ मैंने देखा उससे मुझे लगा कि स्थानीय आर्कीटेक्ट्स के पास लोगों के सभी प्रश्नों के उत्तर होते हैं. आप किसी भी जिले में जाएँ, वहां लोग पहले मेहनत करके अपने हाथों से खुद घर बनाते थे. पर धीरे-धीरे लोगों ने अपने हाथों से घर बनाने का कौशल खो दिया. इसीलिए अब उन्हें घर निर्माण के लिए बाहर के लोगों की ज़रुरत पड़ती है."

"गांधीजी ही शायद एकमात्र ऐसे नेता थे जिन्होंने भारत में घर निर्माण के विषय पर गहराई से सोचा. उनकी जो बात मुझे बहुत पसंद आई और जो मेरे दिल में गहराई से बैठी वो था गाँधीजी का कथन कि किसी आदर्श गांव में घर निर्माण की सभी सामग्री वहां से पांच मील की दूरी के अंदर से ही आनी चाहिए."

"भारत जैसे देश में हमें पैसे, ऊर्जा या किसी भी अन्य वस्तु को बेकार करने, या उसके दुरूपयोग का हमें कोई हक़ नहीं है."

"आर्किटेक्ट्स के काम की तुलना में मुझ पर साधारण राज-मिस्त्रियों और मज़दूरों का प्रभाव अधिक रहा है."

"कम-कीमत के घर सिर्फ गरीबों के लिए उपयुक्त होंगे, यह सोच गलत है. कम-कीमत का मतलब खराब क्वालिटी और कम-सुविधा नहीं होता है. किसी को भी गरीबी की प्रशंसा करने की ज़रुरत नहीं है."

लॉरी बेकर

समय-रेखा

लॉरी बेकर ने आर्किटेक्चर के क्षेत्र में अव्वल किस्म का योगदान दिया. परिवार और व्यक्तिगत जीवन में अच्छा सामंजस्य बिठाकर उन्होंने उच्च दर्ज़े का उल्लेखनीय प्रोफेशनल काम किया. ध्येय और काम के बीच का उनका तारतम्य, और उनके तमाम गुण आज भी लोगों को प्रेरणा देते हैं.
लॉरी बेकर ने अपने जीवन और कार्य से दुनिया के लोगों के लिए एक आदर्श खड़ा किया. उनका काम लम्बे अर्से तक हम सभी को प्रेरणा देता रहेगा.

1917 : जन्म

1938 : रॉयल इंस्टिट्यूट ऑफ़ आर्चीटेक्ट्स के एसोसिएट.

1981 : "रॉयल यूनिवर्सिटी ऑफ़ नेदरलँड्स" द्वारा तीसरी दुनिया में उल्लेखनीय काम करने के लिए डी. लिट. की पदवी से सम्मानित.

1987 : नेशनल हाउसिंग बोर्ड का प्रथम पुरुस्कार.

1988 : भारतीय नागरिक बने.

1990 : पद्मश्री से पुरुस्कृत.

1992 : यूनाइटेड नेशन्स (संयुक्त राष्ट्र संघ) का हैबिटैट अवार्ड और हैबिटैट रोल ऑफ़ हॉनर.

1993 : साधारण लोगों के घर सुधारने के लिए सर रोबर्ट मैथ्यू पुरुस्कार.

1994 : पीपल ऑफ़ द इयर अवार्ड.

1995 : यूनिवर्सिटी ऑफ़ लंदन द्वारा डॉक्टरेट की डिग्री से सम्मानित.

1998 : श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी द्वारा डॉक्टरेट की डिग्री से सम्मानित.

2006 : प्रिट्ज़कर सामान के लिए नामांकित.

2007 : नब्बे वर्ष की आयु में निधन

लॉरी बेकर

"ईंट देखकर मुझे अक्सर इंसानों के चेहरों की याद आती है. एक जैसी मिट्टी को पकाकर ही सभी ईंटें तैयार होती हैं. पर प्रत्येक ईंट का रंग-रूप, उसका आकार, दूसरी ईंट से कुछ अलग होता है. हरेक ईंट की बनावट और उसका स्पर्श भी दूसरी ईंटों से भिन्न होता है. इसलिए, ईंट से बनी दीवार पर प्लास्टर करना मुझे ठीक नहीं लगता है. इस तरह का प्लास्टर मुझे एकदम कृत्रिम और अनावश्यक लगता है. प्लास्टर करने से हरेक ईंट का व्यक्तित्व नष्ट होता है, और उसका परिणाम घर पर भी होता है, क्यों ठीक है न?"

- लॉरी
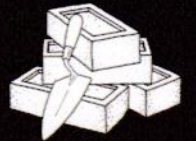
लॉरी बेकर

लॉरी बेकर हमारे देश के सबसे महत्वपूर्ण आर्किटेक्ट थे. घर निर्माण और की तकनीकों के बारे में उन्होंने जीवन भर चिंतन-मनन किया. सरकारी हो या निजी, आफिस हो या घर, हर इमारत को बनाते वक्त लॉरी बेकर उसकी कीमत को कम करने की कोशिश करते थे, जिससे आम साधारण लोग भी उनमें रह सकें. कम-से-कम ऊर्जा का उपयोग, आबो-हवा के अनुकूल और पर्यावरण-मित्र सुन्दर घरों की निर्माण विधि को हम “लॉरी बेकर” तकनीक कह सकते हैं!

उनका जन्म 1917 में इंग्लैंड में हुआ. उनका निधन 2007 में भारत में हुआ. यानि वे नब्बे साल की उम्र तक जीवित रहे. घर डिज़ाइन और निर्माण का काम उन्होंने पहली बार पचास साल की आयु में ही शुरू किया. उन्होंने बिर्मिंघम यूनिवर्सिटी में पढ़ाई की. दूसरे महायुद्ध के दौरान उन्होंने चीन में एक एम्बुलेंस सर्विस को अपनी सेवाएं दीं. चीन से वापिस इंग्लैंड जाते समय उन्हें कुछ महीनों के लिए मुंबई में रुकना पड़ा. उसी दौरान उनकी भेंट महात्मा गाँधी से हुई. गांधीजी का ध्यान लॉरी बेकर के जूतों की ओर आकर्षित हुआ. वो जूते लॉरी बेकर ने खुद अपने हाथों से बनाए थे. गांधीजी उन जूतों की कारीगरी को देखकर बेहद खुश हुए. उन्होंने लॉरी बेकर से कहा, "आप जैसे प्रतिभावान लोगों की भारत में बहुत ज़रुरत है. घर निर्माण करते समय भी हमें लोकल डिज़ाइन, स्थानीय कुशलताओं और स्थानीय चीज़ों का उपयोग करना चाहिए. और जहाँ तक संभव हो, घर निर्माण करने में हम वही सामान उपयोग करें जो वहां से पांच मील तक की दूरी के अंदर उपलब्ध हो."

कुछ सालों बाद लॉरी बेकर भारत वापिस आए और वो कुष्ठ रोगियों के लिए अस्पताल, घर और इमारतों के निर्माण का काम करने लगे. 1948 में उनका विवाह डॉ. एलिज़ाबेथ जेकब से हुआ. फिर उन्होंने कुष्ठ रोगियों के एक अस्पताल में काम करना शुरू किया. वहां पर एलिज़ाबेथ डॉक्टर थीं, और बेकर उनके सहायक थे! अमरीका की महान शिक्षाविद वेल्टी फिशर के लिए बेकर ने लखनऊ में "लिटरेसी हाउस" का डिज़ाइन और निर्माण किया. लखनऊ में ही उन्होंने मानसिक रोगियों के उपचार के लिए "नूर-मंज़िल" अस्पताल का निर्माण भी किया.

बिर्मिंघम स्कूल ऑफ़ आर्किटेक्चर

जीवन के एक समय में लॉरी बेकर का झुकाव "क्वेकर" पंथ की ओर हुआ. "क्वेकर" धार्मिक कट्टरता और रूढ़िओं पर प्रश्न खड़े करते थे. वे एक विवेकशील जीवन शैली को मानते थे. "क्वेकर" पंथ को शांति और भाईचारे के लिए काम करने के लिए 1947 में नोबल पुरुस्कार से भी सम्मानित किया गया था.

पैसों का मूल्य और महत्व, लॉरी बेकर बचपन में ही पहचान गए. बचपन में वो एक बेकरी में बिस्कुट खरीदने गए. वहां उसी कीमत में वो साबुत बिस्किट की बजाए दुगने वज़न के टूटे बिस्कुट खरीद पाए. हाँ, दोनों बिस्किटों का स्वाद बिलकुल एक-जैसा था! फिर क्यों न टूटे बिस्कुट खरीदे जाएँ? उन्होंने इस बारे में सोचा. यह बात लॉरी बेकर जीवनभर नहीं भूले.

1960 के दशक में वे थिरुअनंतपुरम आये. फिर पचास साल की आयु में उन्होंने आर्किटेक्चर और घरों के निर्माण का काम शुरू किया. जो तरीके पारम्परिक राज-मिस्त्री उपयोग करते थे वो बेकर को योग्य लगे. अक्सर वो पुराने लिफाफों के पीछे अपने चित्र और डिज़ाइन बनाते थे. वो अपना सारा काम खुद ही करते थे. उन्होंने अपने लिए कभी कोई ऑफिस नहीं बनाया और न ही कोई सहायक रखा. उनके कई सहयोगी थे जिनसे वो बातचीत करते थे और जिनकी वो मदद लेते थे और उन्हें ट्रेनिंग देकर वो उनसे काम करवाते थे. इस तरह ऑफिस, स्टाफ आदि के अनावश्यक खर्चे से वो मुक्त थे! पर्यावरण के बारे में चिंतन-मनन करने के कारण लॉरी बेकर ने स्टील और सीमेंट का उपयोग कम-से-कम किया. "सीमेंट तो काफी नया है, जबकि लोग सदियों और शताब्दियों से घर बनाकर उनमें रह रहे हैं.
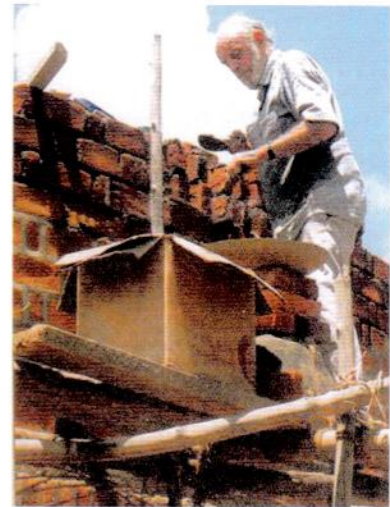
बेकर अपनी निर्माण साइट्स को देखने बार-बार जाते थे. एक दिन वो एक मिस्त्री पर बहुत गुस्सा हुए. घर वापिस लौटने पर बेकर को अपनी गलती का एहसास हुआ. फिर उन्होंने तुरंत एक क्षमापत्र लिखकर मिस्त्री के घर भेजा. बेकर इस तरह की सरल ड्रॉइंग्स बनाते थे जिन्हें साधारण राज-मिस्त्री आसानी से समझ जाएँ.

इतवार के दिन माता-पिता हमें खेलने नहीं देते थे. मेरा बड़ा भाई उम्र में मुझसे दस साल बड़ा था. उसे इस नियम पर बहुत गुस्सा आता था. वो बहुत शैतान भी था! वो चुपचाप, बिना किसी को बताए तैरने चला जाता था और टेनिस खेलता था! मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ! वो मेरा हीरो था! जो ठीक बात हो उसे ज़रूर मानना चाहिए और मूर्खतापूर्ण, बेकार की बातों को छोड़ना चाहिए. यह हिम्मत मैंने अपने बड़े भाई से सीखी!

लॉरी

वो क्रमानुसार चित्र बनाते थे जिससे कोई भी कारीगर उन्हें आसानी से समझ ले. घरों का प्लान बनाने के लिए लॉरी पुराने लिफ़ाफ़े, शादी के कार्ड जैसे बेकार कागज़ इस्तेमाल करते थे. केरल में बहुत साल रहने के बाद भी वो मलयालम भाषा अच्छी तरह नहीं बोल पाते थे. पानी, कल, निर्माण सामान, एक, दो और अन्य कुछ शब्द ही वो मलयालम में बोल पाते थे. उन्हें हिंदी अच्छी तरह से आती थी. भारतीय नागरिक बनने की उनकी अर्ज़ी शासन के पास लम्बे अर्से तक पड़ी रही. फिर 1988 में वो भारतीय नागरिक बने. नागरिकता मिलने से पहले उन्हें हरेक तीन महीने में एक बार पोलिस स्टेशन जाकर वहां रजिस्टर में अपना नाम पंजीकृत कराना होता था.

भारत में हिमालय के पहाड़ी इलाके में बने मकान सालों टिकते थे. उन घरों में स्थानीय सामान और बहुत कम ऊर्जा का प्रयोग होता था. पहाड़ी घरों से बेकर को बहुत प्रेरणा मिली. स्थानीय सामान का घर निर्माण में उपयोग देखकर उन्हें गांधीजी की "पांच मील के अंदर मिलने वाले सामान," वाली बात याद आई. उस नियम पर हर बार अमल कर पाना शायद संभव नहीं था, पर लॉरी बेकर ने उसकी भरपूर कोशिश ज़रूर की. स्टील, कांच, सीमेंट जैसे निर्माण सामान को बनाने में प्रचुर मात्रा में ऊर्जा खर्च होती है. इसलिए बेकर ने उनका इस्तेमाल कम-से-कम किया. दीवारों में उन्होंने अक्सर रंगीन कांच की बोतलों को फिट कीं जिससे घर के अंदर रंग-बिरंगी रोशनी आई. रैट-ट्रैप बांड का उपयोग करके उन्होंने दीवार के निर्माण में 25-प्रतिशत ईंट की लागत कम की. बाहर और अंदर की दीवार के बीच में हवा की परत होने से बाहर की सीलन अंदर नहीं आती थी. बाहर की धूप भी अंदर नहीं आती थी, इसलिए घर ठंडा रहता था. सीमेंट की बजाए चूना, नमी और हवा को नियंत्रित करने के लिए जालीदार दीवारें, स्टील की जगह बांस का उपयोग, पुआल और मिट्टी से दीवार का निर्माण, इस प्रकार के प्रयोगों से बेकर ने अपने निर्माण तकनीक को निखारा. बेकर मानते थे कि किसी भी चीज़ के बार-बार उपयोग से पर्यावरण को कम नुक्सान होगा.

"जिस व्यक्ति का घर मैं बनाता हूँ, उसके बारे में मैं जानकारी ज़रूर हासिल करता हूँ. उनके घर में क्या भोजन पकता है? वो क्या खाते हैं? क्या वे अकेले खाते हैं? उनका सोने का कमरा (बैडरूम) कैसा है? घर का काम, सिलाई का काम, किताबें पढ़ने के लिए क्या सुविधा है? यह बातें मैं अक्सर सोचा करता हूँ. " - लॉरी
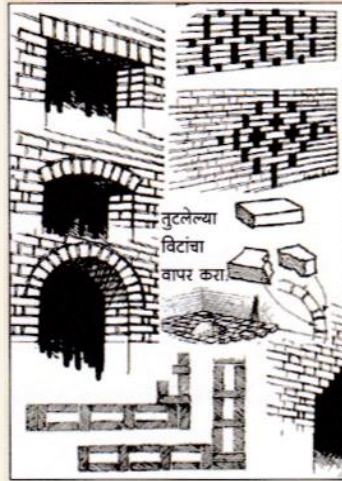
अपने स्कूल में लॉरी की गिनती सबसे होशियार छात्रों में नहीं होती थी. पर चित्र और ड्राइंग बनाने में लॉरी की विशेष रूचि थी. दसवीं की परीक्षा के बाद एक दोस्त ने उससे आर्किटेक्चर कॉलेज में दाखिला लेने की सलाह दी. कॉलेज के प्रिंसिपल, लॉरी बेकर की चित्रकारी से बहुत प्रभावित हुए. उन्होंने लॉरी को कॉलेज में दाखिला दे दिया. वहां पर बेकर ने बहुत सुन्दर चित्रकारी की. साथ में उन्होंने पत्थरों को तराशने, बर्तन बनाने, सिरेमिक और संगीत में भी रूचि दिखाई. बेकर के आगे के काम की वहां एक मज़बूत नींव पड़ी.

बेकर को एक बार कम-लागत के घरों के सेमिनार के लिए दिल्ली में आमंत्रित किया गया. विषय था - गरीबों के लिए घर! यह सेमिनार के महंगे पांच सितारा होटल में आयोजित किया जा रहा था. बेकर ने आयोजकों से नम्रता पूर्वक शामिल न होने के लिए माफ़ी मांगी. लॉरी बेकर के सेमिनार में शामिल होने के खर्च मात्र से एक गरीब आदमी का घर बन सकता था! यह बात बेकर ने सेमिनार के आयोजकों को लिखी. सेमिनार में जाने की बजाए बेकर ने, घरों की कीमत कम करने के विषय पर एक सचित्र पुस्तक लिखी. फिर बेकर ने वो किताब आयोजकों को भेजी. बाद में "कोस्फोर्ड" संस्थान ने वो पुस्तक छापी.
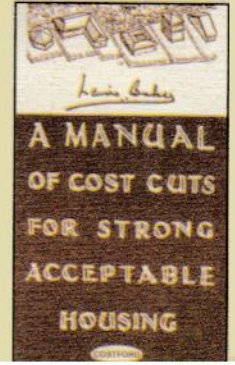
भारत के ग्रामीण इलाकों में लोगों को निर्माण के लिए कोई भी बड़ी मशीन उपलब्ध नहीं थी. वहां पर लोगों ने सिर्फ पत्थर, मिट्टी और लकड़ी का उपयोग करके सुन्दर और टिकाऊ घरों का निर्माण किया था. उन्हें देखकर बेकर को बहुत आश्चर्य होता था.
बेकर कागज़ पर इन सब बातों को नोट करते थे. वो परंपरागत घरों की सभी बारीकियों पर गंभीरता से विचार करते थे.
परंपरागत सादे-सुन्दर घर, समय की कसौटी पर खरे उतरे थे. उनसे बेकर को एक नई दृष्टि मिली.
पारम्परिक निर्माण सामग्री के साथ-साथ उपलब्ध कौशल, लोगों की ज़रूरतों और संस्कृति जैसी बातों पर भी बेकर बहुत सोच-विचार करते थे. बेकर मानते थे कि आर्किटेक्चर का विषय सिर्फ विशेषज्ञों का नहीं था, उसमें आम लोगों के सहभाग की भी सख्त ज़रुरत थी. उसके लिए लॉरी बेकर ने एक दर्जन से भी ज़्यादा पुस्तकें लिखीं! उन सभी पुस्तकों के चित्र भी बेकर ने खुद ही बनाए. उनकी सभी पुस्तकें हस्तलिखित होती थीं. थिरुवनंतपुरम में उनकी बनाई दो इमारतें "सेंटर फॉर डेवलपमेंट स्टडीज" CDS और बस स्टैंड के पास स्थित "कॉफ़ी हाउस" बेकर की दूरदृष्टि के प्रतीक हैं. बेकर चाहते थे कि केरल में कोई भी इमारत नारियल के पेड़ से ऊंची नहीं बने! बेकर अपनी संवेदना और हास्य-विनोद से कठिन परिस्थितियों में भी कोई सरल रास्ता ढूंढ लेते थे.

गुजरात, उत्तर प्रदेश,और पश्चिम बंगाल में बेकर द्वारा बनाए घर सभी अलग-अलग प्रकार के हैं. वो केरल के घरों से बिल्कुल भिन्न हैं. कहने का मतलब यह है कि गुजरात की "बेकर-शैली" केरल की "बेकर-शैली" से बिल्कुल भिन्न थी.
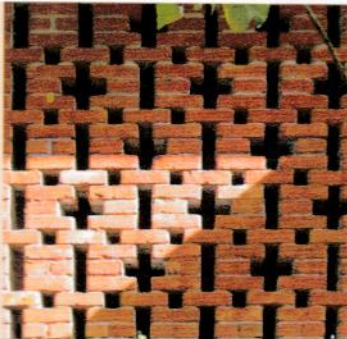
“भारत के ग्रामीण इलाकों में लोगों को निर्माण के लिए कोई भी बड़ी मशीन उपलब्ध नहीं थी. वहां पर लोगों ने सिर्फ पत्थर, मिट्टी और लकड़ी का उपयोग करके सुन्दर और टिकाऊ घरों का निर्माण किया था. उन्हें देखकर बेकर को बहुत आश्चर्य होता था.”

लॉरी
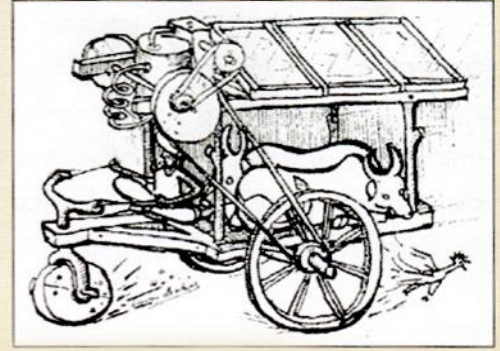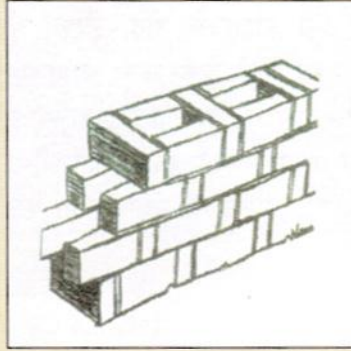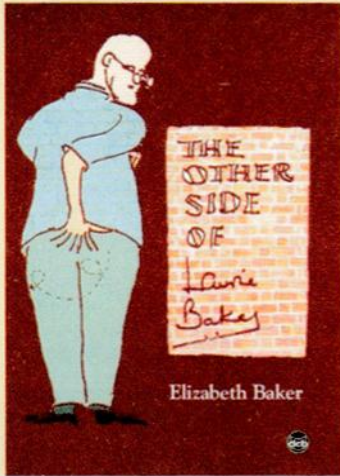
सौर-ऊर्जा पर चलने वाली बैलगाड़ी
(बेकर द्वारा बनाया कार्टून)

बेकर के काम और उनकी पद्धति की, कई लोगों ने कड़ी आलोचना भी की. पर बेकर ने उन फज़ूल के आरोपों का उत्तर देने में अपना वक्त जाया नहीं किया. आम लोगों के लिए सस्ते, सुन्दर घर बनाने के मुहिम में ही उन्होंने अपनी ऊर्जा लगाई. सामाजिक जीवन की ख़राब हालत को उन्होंने अक्सर अपने लेखों में प्रस्तुत किया. नाराज़गी व्यक्त करने के उन्होंने वैकल्पिक तरीके भी सुझाये.

लॉरी बेकर महज़ एक आर्किटेक्ट नहीं थे. उन्होंने अपने काम से जीवन के कई क्षेत्रों को स्पर्श किया. अनेस्थेसिस्ट, माली, बावर्ची, किसान, मज़दूर, ड्राइवर, बढ़ई, राज-मिस्त्री के साथ-साथ वो एक मंझे हुए कार्टूनिस्ट भी थे. बेकर के कार्टून्स में उनकी हास्य-व्यंग की प्रवृति दिखाई देती है. सादे-सरल तरीके से जीवन कैसे गुज़ारा जाये, यह भी उनके कार्टून्स में साफ़ झलकता है. अपने काम को दिल से और गहरी लगन से करने की वजह से बेकर ने ज़िन्दगी का खूब लुत्फ़ उठाया. उनका जीवन ही उनका सन्देश था. वैसे उन्हें 1988 में भारतीय नागरिकता मिली, पर जिस क्षण वो गांधीजी के संपर्क में आये शायद उसी दिन से ही बेकर भारतीय बन गए थे!

ब्रिटिश सरकार ने उन्हें OBE "आर्डर ऑफ़ द ब्रिटिश एम्पायर" के सम्मान से नवाज़ा. संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनाइटेड नेशंस) ने उन्हें नोबल पुरुस्कार जैसा "हैबिटैट" पुरुस्कार दिया. 1990 में भारत सरकार ने लॉरी बेकर को "पद्मश्री" से सम्मानित किया! बेकर का एक बेटा तिलक और दो बेटियां विद्या और हायडी हैं. बेकर, भारत देश और भारतवासियों से बेहद प्रेम करते थे.

हास्य-विनोद से परिपूर्ण लॉरी बेकर का निधन 1 अप्रैल, 2007 को - यानि अप्रैल-फूल वाले दिन हुआ. देहांत के समय बेकर अपने घर "हैमलेट" में ही थे और तब वे 90 वर्ष के थे.

तुम्हें आधी ईंट चाहिए न?

फिर पूरी ईंट को
क्यों तोड़ रहे हो.
ऐसा करके तुम
पैसे, समय और
ऊर्जा सभी नष्ट
कर रहे हो?
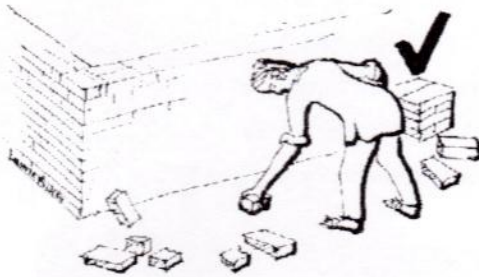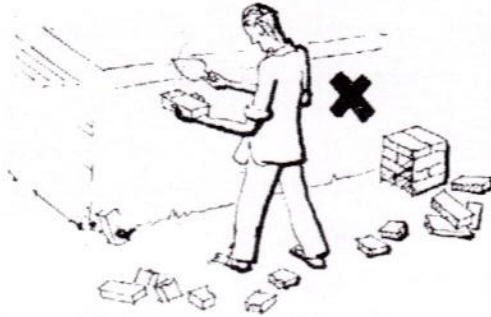
ज़रा नीच नज़र डालो. वहां से तुम टूटी आधी ईंट उठाओ
और उससे अपना काम चलाओ.
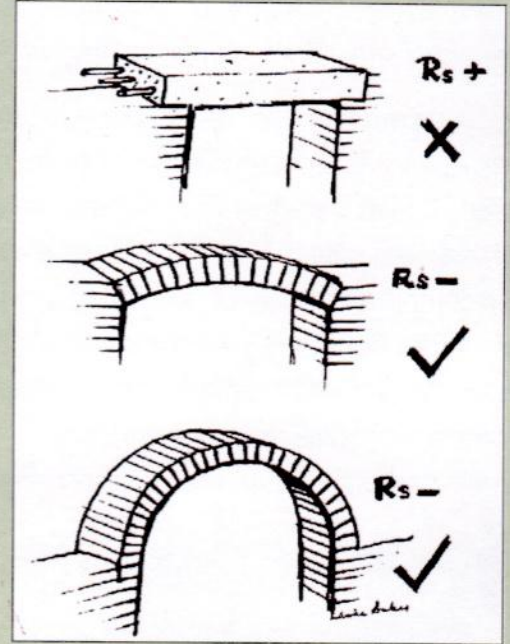
यह घर मिट्टी और ईंटों का बना है.
यह घर बहुमंज़िला है और उसपर नारियल के
पेड़ों की छाया भी पड़ती है.

यह घर मिट्टी और ईंटों का बना है.
क्यों, सुन्दर है न यह घर?

भारत में 20 करोड़ लोगों के पास रहने के लिए घर नहीं हैं. आर्किटेक्चर के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को इस बात पर विचार करना चाहिए. सरल और सस्ते सामान से कैसे सुन्दर घर बन सकते हैं, उन्हें इस बात का शोध करना चाहिए. यह आम लोगों की सख्त ज़रुरत है. उस ज़रुरत को पूरा करना संभव है. पर उसके लिए हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा. साफ़ पानी और नाली के ख़राब पानी को अलग-अलग करने की बेहद ज़रुरत है. हमारे समाज का बहुत बड़ा हिस्सा जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित है. अगर हम ऐसे गरीब लोगों के बारे में सोचेंगे तो हमारे विचार भी बदलेंगे. और फिर हमारे द्वारा उठाए कदम भी कुछ अलग होंगे!

घर की दीवारों को हम ईंटों से बनाते हैं और फिर उस पर प्लास्टर करते हैं. दीवार ईंट की बनी है यह दर्शाने के लिए हम प्लास्टर पर ईंट के डिज़ाइन की नक्काशी करते हैं और उन्हें रंगते हैं! यह कितनी मूर्खता की बात है! कभी हमें कोई पेंटिंग अच्छी लगती है तब हम घर लाकर उसे दीवार पर टांगते हैं. या फिर कोई मूर्ती अच्छी लगे तो घर लाकर उसे एक ख़ास स्थान पर रखते हैं. पर उस पेंटिंग और मूर्ती को निहारने के लिए किसी भी व्यक्ति को उसके पास जाना होगा. पर घरों और इमारतों के साथ ऐसा नहीं होता है. हम कहीं भी आते-जाते, उन्हें देखते हैं. किसी भी आर्किटेक्ट का काम है कि वो इमारत को सुन्दर बनाये, जिससे लोग उस घर को देखकर खुश हों और उनके दिल को चैन मिले.

कई भारतीय घरों में मैंने जाली लगी देखी. उसका प्रभाव मुझ पर पड़ा और फिर मैंने घर बनाने की अपनी तकनीक में काफी बदलाव किया. उससे एक ओर घर की सुंदरता बढ़ी और दूसरी ओर खर्चा भी कम हुआ. जाली से घर में बाहर की साफ़ हवा अंदर आती है. हाँ, तेज़ गर्मियों में बाहर की गर्म लू से लोगों को तकलीफ भी हो सकती है. जाली से बाहर का प्राकृतिक प्रकाश भी घर में आता है. दरवाज़ों और खिड़कियों के ऊपर सीमेंट और स्टील के लिंटर की जगह वहां पर अर्ध-गोल मेहराब बनाना सस्ता और अच्छा होगा. मेहराब, अधिक मज़बूत भी होगी! मुझे दरवाज़ों और खिड़कियों में फ्रेम (चौखट) लगाने की बात भी गलत लगती है. इसलिए मैंने कई घर बिना चौखट के, सफलतापूर्वक बनाये हैं.

भारत के लाखों-करोड़ों घरों में लोगों को मूलभूत सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं. इन घरों में फर्श, छत, छप्पर, दरवाज़े और खिड़की जैसी बुनियादी चीज़ें भी नदारद हैं. कई घरों में दो परिवार एक-साथ रहने को मज़बूर हैं! वहां पर बच्चे किस तरह की शांति में पढ़ाई करते होंगे? हम खूब ऊंची, गगनचुम्बी अट्टालिकाएं बनाते हैं, मॉल और एयर-कण्डीशन्ड सिनेमाघर बनाते हैं, नदियों पर बड़े विशाल पुल बनाते हैं, पर गरीबों के घरों की मूलभूत सुविधाओं को बिल्कुल नज़रअंदाज़ करते हैं.

हमें झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लोगों के प्रति अपना दृष्टिकोण और रवैया बदलना चाहिए! हमारे जीवन में घर और परिवेश का बहुत करीबी का सम्बन्ध होता है.

मुझे अपने कुछ हिन्दू और मुस्लिम मित्रों के वर्णन से ऐसा लगता है जैसे वे सचमुच में ईसाई हों. वे लोग, मुझ से अधिक उदार ईसाई हैं! अस्सी वर्ष के अनुभव में मुझे हिंसा ही सबसे बुरी चीज़ लगती है. धर्म, देश, वंश या अन्य किसी भी बात को लेकर की गई हिंसा से लोगों के सामने खड़े मूलभूत प्रश्न हल नहीं होते हैं. एक-दूसरे से प्रेम और भाईचारे से ही लोगों के ज़रूरी प्रश्न हल हो सकते हैं. और सच में वही सच्चा धर्म भी है!

लॉरी बेकर मकानों के डिज़ाइन और निर्माण के लिए बहुत काम फीस लेते थे. अक्सर उनकी फीस किसी राज-मिस्त्री की दिहाड़ी के बराबर होती थी! "क्योंकि अक्सर दो-तीन साइट पर मेरा काम चल रहा होता है, इसलिए उन पैसों से मेरा काम ठीक-ठाक चल जाता है! मेरे मूल देश के लोगों ने भारत के लोगों को पहले से ही लूटा है. पर उस लूट की भरपाई मेरे लिए करना मुश्किल है. सच में तो मुझे कुछ भी पैसे नहीं लेने चाहिए, पर मैं भी थोड़ा स्वार्थी हूँ!!"

किसी भी ज़मीन के टुकड़े का सबसे ऊंचा हिस्सा कहाँ है और सबसे निचला हिस्सा कहाँ है, इस पर मैं विशेष ध्यान देता हूँ. कहाँ छोटी झाड़ी हैं? और कहाँ पेड़ हैं उसे भी मैं ध्यान में रखता हूँ. मवेशी और पालतू जानवर कहाँ रखे जायेंगे? हवा और बारिश के आने के दिशा, इसका भी मैं पूरा ध्यान रखता हूँ. उस भवन का इस्तेमाल घर का मालिक करेगा, मैं नहीं करूंगा. इस बात का मनन-चिंतन मैं हमेशा करता रहता हूँ.
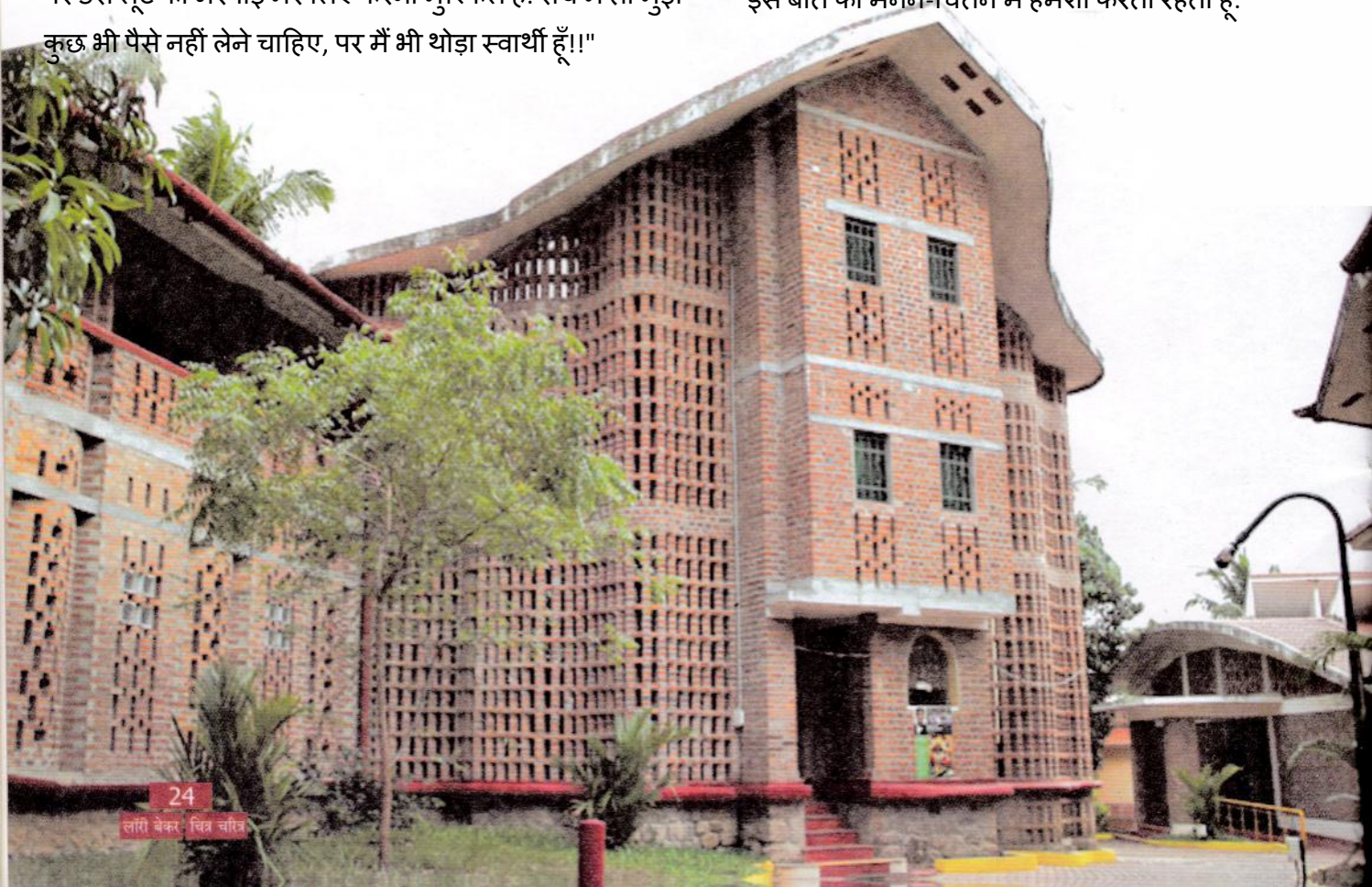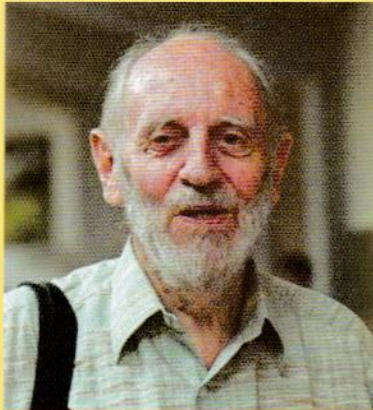
1990 में

भारत सरकार ने

लॉरी बेकर को

पद्मश्री

से सम्मानित किया.
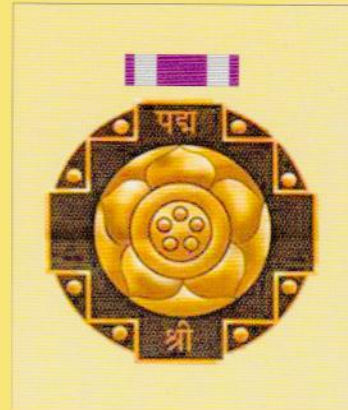
6 Every building should be UNIQUE. No two people, or families etc are alike, so why should their houses all be the same?

10 DONT ROB NATIONAL RESOURCES & do not use them ~~extravagantly~~ or ~~unnecessarily~~.

11 Be HONEST & TRUTHFUL in design & material usage, construction, costs, & about your own mistakes!

12 AVOID OPULANCE & 'SHOWING-OFF', and dont use currently fashionable gimmicks.

13 Get your CONSCIENCE out of deep-freeze & USE it. Let ALL YOU DO be honest & truthful – not only yr buildings.

14 Look closely at YOUR OWN PREJUDICES. Question them and see if they are still justifiable!

15 HAVE FAITH IN YOUR OWN CONVICTIONS & have courage to stick to them — but respect those of other people.

16 Make COST-EFFICIENCY your WAY OF LIFE – not merely "Low Cost for the Poor". Practice what you preach.

20 TRIM your drawings, staff, equipment, travel & transport, paper, & expenses.

(MY FEELINGS ABOUT BEING AN ARCHITECT!) Laurie Baker
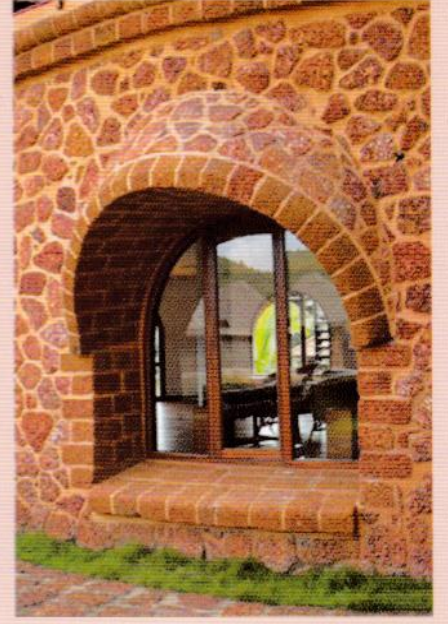
डेक्कन एज्युकेशन सोसायटीचे
न्यू इंग्लिश स्कूल,
टिळक रोड, पुणे ३०.

'अहम भारत'
उपक्रमांतर्गत पुस्तिका

Cadence Design Systems, Inc.
cādence®

खाजगी वितरणासाठी